है, तो वह शूकर के समान विष्ठा खाने जैसे कार्य करने को बाध्य हो जाएगा। इसी भाँति जिसे देव-वपु की प्राप्ति हो, उसे भी अपनी योनि के योग्य कर्म करना होगा। प्रकृति का यही नियम है। परन्तु किसी भी योनि में परमात्मा जीवात्मा के साथ निरन्तर रहते हैं। वेदों में कहा है, **द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया।** श्रीभगवान् जीव पर इतने कृपालु हैं कि वे सदा उसका साथ देते हैं, योनि-योनि में परमात्मा रूप में रहते हैं।

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान्गुणान्।
कारणं गुणसंगोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु।।२२।।

पुरुषः=जीवात्मा; **प्रकृतिस्थः**=प्रकृति में स्थित; **हि**=ही; **भुंक्ते**=भोगता है; **प्रकृतिजान्**=प्रकृति से उत्पन्न; **गुणान्**=गुणों को; **कारणम्**=कारण है; **गुणसंगः**=गुणों का संग; **अस्य**=इस जीवात्मा के; **सत्-असत्**=उत्तम-अधम; **योनिजन्मसु**=योनियों में जन्म का।

अनुवाद

प्रकृति में स्थित जीवात्मा ही प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुणों को भोगता है। गुणों का यही संग इस जीवात्मा के उत्तम-अधम योनियों में जन्म का कारण है।।२२।।

तात्पर्य

जीव के देहान्तर की प्रक्रिया को समझने के लिए यह श्लोक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। द्वितीय अध्याय में कहा है कि वस्त्र बदलने की भाँति जीवात्मा एक देह को त्याग कर अन्य देह धारण कर लेता है। इस देहान्तर का कारण संसार में उसकी आसक्ति ही है। जब तक वह इस अनित्य जगत् पर मुग्ध रहता है, तब तक निरन्तर देहान्तर करता रहता है। प्रकृति पर प्रभुत्व की इच्छावश उसे अवांछनीय योनियों की प्राप्ति भी होती है। विषयवासना के प्रभाव से उसे कभी देव-शरीर मिलता है, तो कभी मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, जलचर, सन्त अथवा कृमि आदि योनियों में जन्म होता है। यह क्रम अविराम चल रहा है। अच्छी-बुरी सब अवस्थाओं में जीव अपने को वातावरण का स्वामी समझता है, जबकि वास्तव में वह सब प्रकार से प्रकृति के आधीन है।

जीव को विभिन्न योनियों की प्राप्ति के कारण का यहाँ निर्देश है। वास्तव में इसका कारण प्रकृति के गुणों का संग ही है। अतएव यह आवश्यक है कि वह माया के त्रिविध गुणों से मुक्त हो कर शुद्धसत्त्व में स्थित हो जाय। इसी का नाम 'कृष्णभावनामृत' है। जब तक जीव कृष्णभावनाभावित नहीं हो जाता, तब तक उसकी मति अनादिकालीन विषयवासना से दूषित रहेगी, जिसके परिणामस्वरूप वह देहान्तर करता रहेगा। अतएव इस वर्तमान मति को बदलना है। यह केवल प्रामाणिक आचार्यों के मुखारविन्द से भगवत्-कथा सुनने से होगा। इसका सर्वोत्तम आदर्श स्वयं अर्जुन है—वह भगवान् श्रीकृष्ण से भगवत्-विज्ञान का श्रवण कर रहा है। इस प्रकार का श्रवण-परायण जीव माया पर प्रभुत्व की अपनी चिरकालीन इच्छा से शनैः-शनैः मुक्त